128650 - क़ुरआन को पढ़ने का उद्देश्य उस पर चिंतन करना और अमल करना है

प्रश्न

एक व्यक्ति है जो अल्हम्दु-लिल्लाह क़ुरआन को अच्छी तरह से पढ़ना जानता है। क्या उसके हक़ में मुसहफ़ से अधिक से अधिक क़ुरआन करीम की तिलावत करना बेहतर है या रिकॉर्ड किए गए टेप के माध्यम से किसी एक पाठक (क़ारी) को सुनना बेहतर है?

विस्तृत उत्तर

“उसके लिए सबसे अच्छा वह करना है, जो उसके दिल के लिए सबसे अच्छा और उसपर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला है, चाहे वह क़ुरआन की तिलावत करना या उसे सुनना हो। क्योंकि क़ुरआन पढ़ने का उद्देश्य चिंतन करना, अर्थ समझना और जो कुछ अल्लाह की किताब से इंगित होता है, उसके अनुसार कार्य करना है। जैसा कि सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फरमाया :

﴿كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ﴾ [ص : 29].

“यह (क़ुरआन) एक पुस्तक है, हमने इसे आपकी ओर उतारा है, बहुत बरकत वाली है, ताकि वे इसकी आयतों पर विचार करें, और ताकि बुद्धि वाले लोग (इससे) उपदेश ग्रहण करें।” (सूरत साद : 29).

तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फरमाया :

﴿إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ﴾ [الإسراء : 9]

“निःसंदेह यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है, जो सबसे सीधा है।” (सूरतुल-इसरा : 9)

तथा सर्वशक्तिमान अल्लाह ने फरमाया :

﴿قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ﴾ [سورة فصلت :44]

“आप कह दीजिए : वह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, मार्गदर्शन और आरोग्य है।” (सूरत फुस्सिलत : 44). उद्धरण समाप्त हुआ।

“मजमूओ फतावा इब्ने बाज़” (24/363)।